5

चित्र कथा

खिड़कीक जन्म

राजा बजलाह सभा करबाक लेल बहुत पैघ घर बनाऊ।

मंत्री- बहुत सुन्दर घर बनिकय तैयार भयगेल।

सभाक तैयारी भेल- राजा, मंत्री, सभासद, आबि गेलाह।

सभागारमे अन्हार छल, राजा कहलनि-इजोत कहाँ अछि?

मंत्री, सभासद सभगोटे घरसँ मुट्ठीमे अन्हारकेँ बान्हि बाहर निकालय लगलाह आ इजोतकेँ मुट्ठीमे बान्हि सभागारमे आनय लगलाह।

राजा- पुनः इजोत नहि भेल।

मंत्री - सरकार! मुट्ठीमेसँ अन्हार आ इजोत सभ चूबि गेल।

मंत्री- छतकेँ हटा देल जाय तँ इजोते-इजोत भय जायत।
राजा- हँ, ठीक कहलहुँ।

छत विहीन सभागारमे सभा होमय लागल । ताबते मूसलाधार बरखा भय गेल आ सभ गोटे भीजि गेलाह।

राजा मंत्री पर खिसिया गेलाह। बजलाह- ई की भेल ?

सभासद डेराइत बजलाह- सरकार बरखा समयमे छत देवाल पर राखि देबैक आ घरमे डिबिया लेसि देल जायत। राजा- हँ, ठीक कहलहुँ, एहिना कयल जाय।

मंत्रीकेँ ई बात नीक नहि लगलनि।
मंत्री- हवामे डिबिया मिझा जायत, तहन ?

सभासद- बरखादिन छुट्टी राखल जाय। राजा- सोलहो आना ठीक कहलहुँ। छुट्टी होइत रहत आ काजो चलैत रहत।

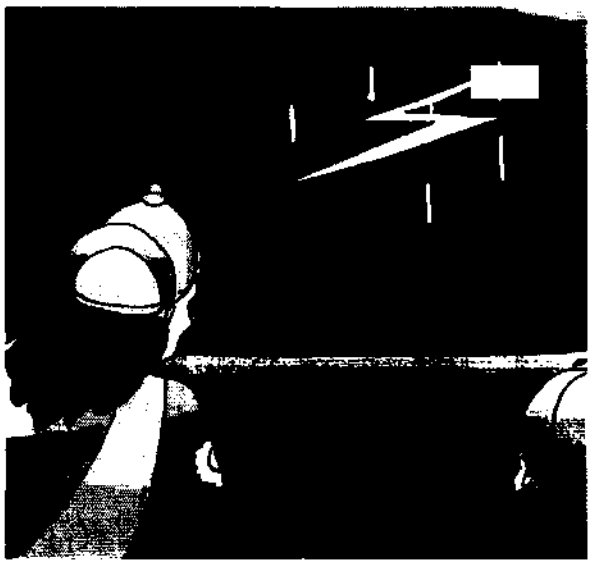

राजा सभागारमे बैसल रहथि। देवाल दिस तकैत। मेघ लागल रहय। बिजुली चमकि उठल। देवालक फाँक दयकय भक दय इजोत आबि गेल ।

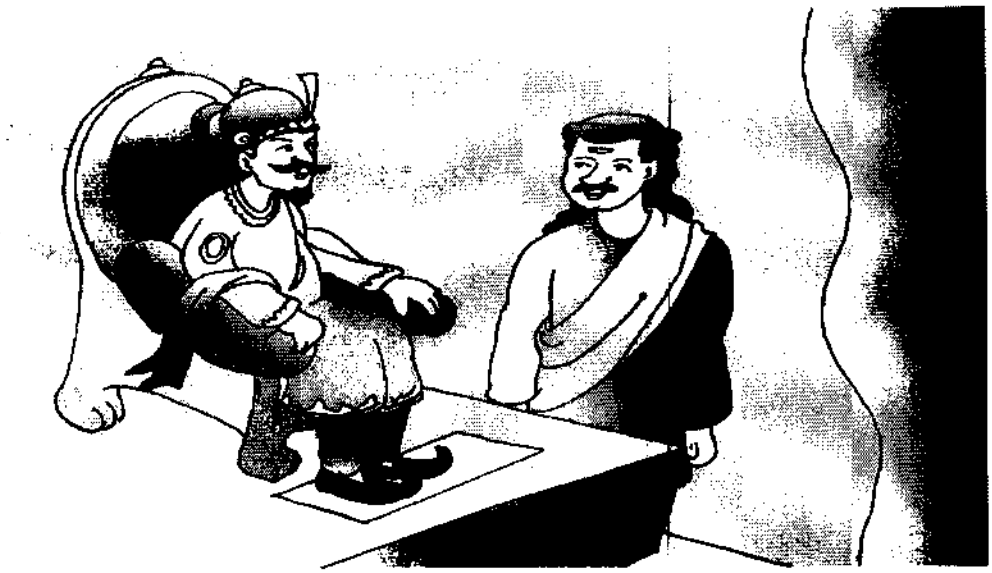

राजा खूब प्रसन्न भेलाह, बजलाह- मंत्रीजी उपाय तऽ भेटि गेल। मंत्री- अवाक् भय गेलाह, पुछलनि -

कथिक उपाय सरकार ?
राजा- वैह इजोतक ।

राजा- देवालमेसँ किछु ईंटाकेँ हटा दिऔक। कतहु- कतहु भूर बना दिऔक। भरि इच्छा इजोत आबय लागत। हवा सेहो आबय लागत । खिड़कीक जन्म ताही दिनसँ भेल।